ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 97-99

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

हिन्दी दलित कवयित्रियों के काव्य-लेखन में सामाजिक अस्मिता की आहट

नीतू देवी

असि0 प्रोफेसर – हिन्दी विभाग आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, कानपुर नगर (उ0प्र0), भारत

Received- 25.02.2020, Revised- 28.02.2020, Accepted - 04.03.2020 E-mail: mg98370@gmail.com

सारांश : *परमात्मा ने जब नारी का सृजन किया तो उसे पुरूष के समान ही बुद्धिकौशल और कलात्मक अभिरूचि प्रदान की परन्तु जहाँ एक ओर पुरूषों को बल प्रदान किया, वहीं दूसरी ओर नारी को कोमलता और सौन्दर्य। पुरूष समाज ने नारी के इसी गुण का फायदा उठाकर उसे असहाय और कमजोर बनाकर हमेशा उसके ऊपर अत्याचार करता रहा। कभी पुरूष के बल ने तो कभी उसकी कामुकता ने। नारी को काल के गर्त में ढकेल दिया। मध्ययुगीन भारत में तो महलों में रहने वाली रानियां अपने गढ़ पर आक्रमणकारी शत्रु के विजयघोष के साथ जौहर की भीषण अग्नि में अत्यन्त पीड़ादायक मृत्यु को अंगीकार कर लेती थीं। यह शिकंजा था उन आक्रमणकारियों की कामुकता का जो किले पर अधिकार करने के पश्चात वहाँ की समस्त स्त्रियों को अपनी सम्पत्ति समझकर अधीनस्थ कर लेते थें और उन्हे उपभोग की वस्तु समझते थें।*

कुंजीभूत शब्द– परमात्मा, कलात्मक, अभिरुचि, अत्याचार, विजयघोष, पीड़ादायक, आक्रमणकारी, अधीनस्थ।

पुरूषसत्ता का समाज में देखा जाये तो स्त्री को केवल दीन–हीन और भोग्या ही समझा गया। उसके ऊपर पुरूषवादी समाज के द्वारा बनाए गये नियमों को लादा ही गया, जिसके कारण स्त्री समाज पर शासन किया जा सके। पर कहते हैं न कब तक किसी असहाय को सताओगे वह एक न एक दिन अपने अस्तित्व की खातिर अवश्य ही प्रतिकार करेगा।

दलित कवयित्रियों द्वारा लिखी गयी दलित कविताएं भी दलित पिछड़े, अपृश्य समाज को सामाजिक अस्मिता की पहचान कराती हैं। दलित समाज, सवर्ण वर्ग द्वारा सदियों से प्रताड़ित किया गया, उसे घृणित जीवन जीने के लिये विवश होना पड़ा। यही कारण है कि युगों–युगों से सतायी गयी दलित स्त्री के काव्य में एक सच्चाई और अस्मिता के लिये संघर्ष की चुनौती के रूप में देखा जा सकता है।

दलित कवयित्रियों ने जातिवादी एवं पुरूषसत्तावादी बंधनों को तोड़कर नैतिकता, सहनशीलता और त्याग जैसे मूल्यों को नकार दिया। डॉ0 बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर जी ने 1942 में नागपुर में 'अखिल भारतीय महिला सम्मेलन' में कहा था, " किसी भी समाज की प्रगति का सही अंदाजा स्त्रियों में हुई प्रगति से ही लगाया जा सकता है। आप घरों से निकलकर यहाँ तक आई निश्चय ही आप प्रगति के पथ पर हैं। आप अपने पतियों के सामाजिक कार्यों में सहयोग करें। पति यदि शराब पीकर घर में घुसे तो उनके लिये घरों के दरवाजें बंद कर दें। अधिक नहीं तो इन थोड़ी–सी बातों पर अमल करें तो निश्चय ही आपकी प्रगति होगी। "[1]

शिक्षा और अम्बेडकर जी के विचारों से प्रेरित होकर और दलित जागृति आन्दोलन से जुड़कर भी दलितों को वह अधिकार अभी नहीं मिल सकें ? आज भी यह वर्ग अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़ रहा है। दलित नारी भी अपनी अस्मिता की पहचान को स्थापित करने में संघर्षशील है। दोनों ही अपनी समाजिक पहचान के प्रति संघर्ष कर रहे हैं, जिसे सुशीलाटाक भौरे अपनी कविता 'ठहरो नहीं आगे बढ़ो' में प्रकट करती हैं,"घबराकर भागता है मन/कठिन, कठोर, यातनापूर्ण/जीवन के शुष्क रेगिस्तान से/जीवन संघर्षों के ताप से/जीवन के कड़वे यथार्थ से।"[2] कवयित्री यहाँ पर मनुवादियों एवं पुरूष समाज द्वारा दी गयी अमानवीय यातनाओं को जीवन संघर्षों के रूप में उजागर किया है। वहीं दूसरी ओर रजनी तिलक ने अपनी कविता 'औरत–औरत में अंतर है' में लिखती हैं, " एक सताई जाती है स्त्री होने के कारण/दूसरी सताई जाती है स्त्री औरत दलित होने पर/एक तड़पती है सम्मान के लिये/दूसरी तिरस्कृत है भूख, अपमान से/प्रसव पीड़ा झेलती फिर भी एक सी/जन्मती हैं एक नाले के किनारे/दूसरी अस्पताल में/एक पायलट है/तो दूसरी शिक्षा से वंचित है/एक सत्तासीन है/दूसरी निर्वस्त्र घुमायी जाती"[3] यहाँ दलित स्त्री और सवर्ण स्त्री में भिन्नता दिखायी गयी। दोनों पुरूश समाज से पीड़ित हैं। सवर्ण स्त्री इसलिये पीड़ित है क्योंकि वह स्त्री है, जिसे दोयम दर्जे का कश्ट झेलना पड़ता, एक पुरूश सत्तात्मक समाज द्वारा दूसरा स्त्री होना? वहीं दलित स्त्री तिहरे षोशण की मार झेलती है– एक तो स्त्री होना, दूसरा दलित स्त्री होना और तीसरा दलित पुरूश समाज द्वारा। यहाँ पर दलित स्त्री ज्यादा पीड़ित है। उसे सत्ताधारी समाज द्वारा अनगिनत कश्ट दिये जाते हैं। समाज द्वारा दिये गये कश्टों के बावजूद दोनों अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक दिखायी देती हैं। सवर्ण स्त्री शिक्षा, नौकरी और सत्ता में अधिकार पा चुकी है फिर भी उसे मनुष्य का दर्जा नहीं मिला है। जिसके लिये वह प्रयत्नशील है। वहीं दलित स्त्री भूख, शिक्षा, सम्मान, सत्ता, समानता जैसे अधिकारों से कोसों दूर

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

है। उसके हिस्से में अपमान, तिरस्कार, घृणा आदि अमानवीय यातनाएँ ही मिलती हैं। वह समाज में अपनी सत्ता बनाने का प्रयत्न करती है।

समता, स्वन्त्रता के अधिकारों से सम्पन्न नारी जब प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ती है तब उसके पंख काटने के प्रयत्न किये जाते हैं। जिसे 'चींटी' नामक कविता में पूनम तुषामड लिखती हैं, '' चींटी चल रही है झुंड बनाकर/क्योंकि चींटी अब खूँखार हो गयी है/मारो–मारो रौंद डालो/अपने पांव से/इसे मसल डालो।''[4] चींटी प्रतीकात्मक कविता है जिसके माध्यम से कवयित्री ने बताया है कि चींटी के जब पर निकल आते हैं तो वह खूंखार हो जाती है। ठीक उसी तरह नारी के अन्दर जब तक सहने की शक्ति रहती है तब तक वह सहती रहती है पर जैसे ही उसके अन्दर की शक्ति क्षीण हो जाती है वैसे ही वह चींटी के समान खूंखार हो जाती है। वह अपने अस्तित्व को बचाने का प्रयत्न करती हैं।

वहीं आगे अपनी कविता 'माँ मुझे मत दो' मेरे पूनम तुषामड दलित लड़की का विरोध और विद्रोह व्यक्त किया है,'' मैं नहीं पहनूँगी उतरन/मैं नहीं खाऊँगी जूठन/मैं नहीं माजूँगीं बर्तन/ऐसी जिल्लत, ऐसा जीवन/माँ मुझे मत दो।''[5] यहाँ जैसे ही दलित लड़की को अपनी अस्मिता का भान हुआ वह समाज द्वारा बनाये गये नियमों का विरोध करने लगी। उसने साफ लहजे में कह दिया कि अब मैं इन सवर्णों के द्वारा दी जाने वाली उतरन, जूठन, इनके घरों के कामों को नहीं करूँगी बस बहुत हो गया, अब ऐसी जिल्लत भरी जिन्दगी नहीं जीऊँगी। दलित नारी ने समझ लिया जब तक विद्रोह नहीं किया जायेगा तब तक दलित समाज का कल्याण नहीं होगा।

बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर द्वारा दिये गये शिक्षारूपी मार्ग के द्वारा ही दलितों का कल्याण होगा जिसे कवयित्री रजनी तिलक ने अपनी कविता 'शिक्षा का परचम' में लिखा है, '' तू पढ़ महाभारत/न बन कुन्ती, न द्रौपदी/पढ़ रामायण/न बन सीता/न कैकयी/पढ़ मनुस्मृति/उलट महाभारत, पलट रामायण/पढ़ कानून/मिटा तिमिर, लगा हलकार/पढ़ समाजशास्त्र, बन जावित्री/फहरा शिक्षा का परचम।''[6] कवयित्री ने अपनी कविता के माध्यम से स्त्री समाज को जगाया है कि अब तुम धर्मग्रन्थ रूपी दलदल से बाहर निकलो क्योंकि इन धर्मग्रन्थों ने नारी को असहाय और कमजोर बनाया है। अगर कोई स्त्री इन नियमों का उल्लंघन करती है तो वह कुल्टा कहलाती है। इसी का भय स्त्री समाज को दिखाकर पुरूश समाज ने अपना हथियार बना रखा है। कवयित्री नारी समाज को इस भ्रम से निकलने का रास्ता शिक्षा के जरिये ही बताया है कि शिक्षित होकर हम अपने अधिकारों को पा सकते हैं। इसी क्रम को आगे बढ़ाती हुई पूनम तुषामड अपनी कविता 'माँ मुझे मत दो' में लिखती हैं, '' मुझको पढ़ना/आगे बढ़ना/खुद को नये साँचे में गढ़ना और सबको है जगाना/सबको उनका हक दिलाना/माँगकर खाने की आदत/और नसीहत/माँ मुझे मत दो।''[7] इस कविता के माध्यम से एक दलित लड़की अपनी माँ से अनुरोध करती है वह कहती है कि अब बहुत हो चुका यह नरक भरी जिन्दगी जीकर।

सुशीलाटाक भौरे ने अपनी कविता 'सपने सज जायेंगे' में लिखती हैं, '' अपने आँसुओ को पोंछकर सजाना होगा/टूटे सपनें स्वंय सिसकियों को बदलकर हुँकार में/लाचार बेबस जिन्दगी को बताना होगा/सबल जीने की राह।''[8] कवयित्री ने कविता के माध्यम से दलित पिछड़ी महिलाओं को सम्बोधित करती हुई कहती हैं कि तुम्हारे सपने तभी साकार होंगे, जब तुम रोने–गिड़गिड़ाने की जगह अपने आप को मजबूत बनाओगी। पुरूषसत्ताक समाज से अपने अधिकार लड़कर लेना होगा तभी तुम्हारी राह आसान होगी।

रजनी तिलक अपनी कविता में 'जीवन बदलेगा अवश्य' में लिखा है, ''दूसरे की रात/अपने जीवन का सपना न बनाओ/उन्हे न सजाओ अपनी आंखों में/विरानी रात/कभी सुख न देगी/अपना जीवन/गाओ, नाचो, खुशी मनाओ। '' [9] कवयित्री को विश्वास है कि एक समय अवश्य परिवर्तन आयेगा जब सदियों से दुखी दलितर समाज को न्याय मिलेगा। उसके सपने साकार होंगे। वह भी सभ्य मानव की श्रेणी में आयेगा।

इन कविताओं में देखा जाये तो दलित समाज में सबसे निम्नतर समझी जाने वाली दलित नारी के जीवन में बदलाव देखने को मिलता है जो स्त्री जाति को आत्मविश्वास दिलाता है। कवयित्री रजनी तिलक अपनी कविता 'करोड़ों पदचाप हूँ' में कहती हैं, '' मैं दलित अबला नहीं/नये युग की सूत्रपात हूँ/अब मैं छोड़ दूँ गुलामगिरी/तोड़ दूँगी बेड़ियाँ ..... /मेरे दुख, दुख नहीं/मेरे आँसू, आँसू नहीं, अँगार हैं/जग का पैगाम हैं/मूक नहीं मैं/आधी दुनिया का आवाज हूँ/ नये युग की सूत्रपात हूँ। ''10 कवयित्री ने अपनी कविता में स्त्री को कमजोर नही बल्कि मजबूत दिखाया है। अब वह अबला नहीं है, न ही गुलाम। उसने गुलामी के बंधनों को तोड़कर नये युग का सूत्रपात करती है। अब उसके दुख नहीं, बल्कि आशाओं की नयी किरण के रूप में होते हैं। अब दलित स्त्री के आँसू नहीं अपितु आगरूपी अँगार हैं जिसमें सवर्णों द्वारा दी गयी अमानवीय यातनाओं को जलाकर भस्म करने की ताकत है। अब दलित स्त्री कमजोर नहीं, बल्कि वह सृजनकर्ता है, नवयुग की आवाज है।

अपनी कविता 'एक मुठ्ठी आसमां' में पूनम तुषामड़ ने लिखा है, '' मुझे चाहिए समता और सम्मान/नहीं चाहिए तुम्हारी दया, करूणा और सहानुभूति/मुझे चाहिए अनुभवों से धधकता जनसमूह विशाल/जो अपनी अभिव्यक्ति को,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

बना सके मशाल।"[11] इस कविता में कवयित्री वर्चस्ववादियों से विरोध करती हुई दिखायी देती है। वह कहती है कि अब मुझे एक मुठ्ठी आसमां के बदले पूरी जमीन चाहिए जिस पर हमारे पूर्वजों ने अपना पसीना बहाया। तुम्हारी दया, करूणा, सहानुभूति नहीं चाहिए, बल्कि समता, सम्मान और अधिकार चाहिए, जिसे सदियों से दबाकर रखे हो तुम ? वहीं आगे कवयित्री परम्परा को चुनौती देती हुई दिखाई पड़ती है। वह अपनी कविता 'अखिर कब तक' में लिखती हैं, "पर खबरदार/अब मेरे/समाज के हाथ में भी चाबुक है षक्ति का/जो तुम्हारे दम्भ को चूर–चूर करने का/रखती है हौसला।" [12]

डॉ0 अम्बेडकर के द्वारा दिया गया शिक्षा का मूलमंत्र 'शिक्षित बनों, संघर्ष करो, संगठित रहो', को दलित समाज ने समझ लिया। अब अत्याचारियों के अहंकार को चकनाचूर करने का साहस आ गया। बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर दलितों के जीवन में परिवर्तन लाने के लिये प्रयत्नशील रहें।" अम्बेडकरवादी दर्षन एवं विचारधारा से दलित चेतना का जन्म हुआ। दलित चेतना की निर्मित दमन और शोषण के प्रति विरोध तथा आत्मसम्मान एवं अधिकारों की मांग से हुई है। दलित कविता हिंसा और घृणा से युक्त, हिन्दू व्यवस्था को नकार कर समता एवं करूणा पर आधारित व्यवस्था की मांग करती है। इस सन्दर्भ में दलित कविता बौद्धधर्म एवं दर्शन से प्रेरणा ग्रहण करती है।" [13]

देखा जाए तो अम्बेडकरवादी विचारधारा ने जाति व्यवस्था पर सवाल खड़ा कर दिया है कि हिन्दू धर्म म'जाति' के आधार पर मनुष्यों को बांटा गया है। 'जाति' एक अभिशाप है जो दलित के साथ जुड़कर उसे अछूत, अपृश्य, निम्नतर बना दिया, जिसका प्रभाव उसके जीवन पर, उसकी आगे आने वाली पीढ़ियों पर पड़ता रहा। उसे पीड़ित, शोषित, अपमानित किया जाता रहा। जिसके कारणउसे सभ्य मनुश्य की श्रेणी से अलग कर दिया गया। जिसका परिणाम दलित कविताओं के मूलस्वर में दिखाई पड़ता है।

दलित स्त्रीवादी कविताएं पुरूषसत्ताक समाज और वर्णवादी व्यवस्था को ध्वस्त करने के लिए लिखीं गयीं हैं। रजनी तिलक 'वजूद है' कविता में लिखती हैं, " जानते हो न ?/एक जमाने में अखबारों में/हमारी परछाईयां भी वर्जित थी/अभिव्यक्ति पर पाबंदी थी/तब मुर्दों से अछूतों में स्वाभिमान की चिंगारी/फूटती थी।" [14] इस कविता में कवयित्री ने बताया कि एक समय ऐसा था जब दलितों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं थी, यहाँ तक दलितों की परछाईं भी अशुभ मानी जाती थी, तब बाबा साहेब ने संवैधानिक अधिकारों को दिलाकर दलित, पिछड़ों को अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता दिलायी।

दलित स्त्रीवादी कविता, विषमतावादी भारतीय समाज में जाति भेद, ऊंच–नीच के खिलाफ अपनी आवाज को बुलन्द करती हुई दिखायी पड़ती हैं। जाति विभेद एक ऐसी समस्या है जिसको अगर दूर नहीं किया जायेगा तो किसी भी समाज व राष्ट्र की प्रगति के लिए नासूर बना रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कौशल्या बैसंत्री– 'दलित महिला और अम्बेडकर', मासिक प्रतिपक्ष अप्रैल 1991
2. डॉ0 सुशीला टाक भौरे– 'हमारे हिस्से का सूरज', पृष्ठ सं0– 13.
3. दलित निर्वाचित कविताएँ : कँवल भारती, (रजनी तिलक, 'औरत–औरत में अंतर है'), पृष्ठ सं0– 144
4. पूनम तुषामड– 'चींटी' कविता, पृष्ठ सं0– 24
5. पूनम तुषामड– 'माँ मुझे मत दो' कविता, पृष्ठ सं0– 42
6. वही, पृष्ठ सं0– 46
7. दलित निर्वाचित कविताएँ : कँवल भारती, (रजनी तिलक, 'शिक्षा का परचम'), पृष्ठ सं0– 146
8. दलित चेतना की कविताएँ : सं0 रामचन्द्र एवंप्रवीण कुमार, पृष्ठ सं0– 104
9. दलित निर्वाचित कविताएँ : कँवल भारती, (रजनी तिलक, 'जीवन बदलेगा अवश्य'), पृष्ठ सं0– 146
10. दलित चेतना की कविताएँ : सं0 रामचन्द्र एवं प्रवीण कुमार, पृष्ठ सं0– 146
11. पूनम तुषामड– 'एक मुठ्ठी आस्मां' कविता, पृष्ठ सं0– 74
12. पूनम तुषामड– 'आखिर कब तक' कविता, पृष्ठ सं0– 74
13. दलित चेतना की कविताएँ : सं0 रामचन्द्र एवं प्रवीण कुमार, पृष्ठ सं0– 108
14. दलित निर्वाचित कविताएँ : कँवल भारती, (रजनी तिलक, 'वजूद है'), पृष्ठ सं0– 149

*****